सत्संग परम संत पुष्करदयाल जी महाराज

दुर्गापुर, दिनांक 31 मई 2015

!! राधा–स्वामी.!!

आपको एक राज की बात बताऊँ? हमारे धाम के दिन सुधर रहें, ये है राज की बात। आप ने देखा नहीश क्या–क्या नए काम हो रहे हैं। ये सब महाराज जी समाधि पर बैठे–2 चमत्कार कर रहें। ये मत समझना समाधि पर केवल पत्थर लगे हैं, वहाँ पत्थर नही हैं, वहाँ महाराज जी बैठे हैं। एक बात और बताऊँ, उस समाधि पर जो भी सच्चे मन से फरियाद करेगा, अरदास करेगा, उसकी अरदास पूरी हो जाएगी। ये मैं अपने अनुभव से बता रहा हूँ , और लोगों का भी अनुभव बता रहा हूँ। वो लोग वहाँ गए अभ्यास किया और उनका काम हों गया। लेकिन एक काम है जो आप लोगों को भी करना पडेगा, वो है विश्वास बिना विश्वास के कुछ भी नही होगा। मेरे पास लोग आते हैं और कहते हैं महाराज जी प्रसाद दे दो। मैं कहता हूँ चीनी लाओ, अब चीनी क्या है? चीनी कोई चमत्कार है, मैं चीनी का प्रसाद बनाता हूँ और देता हूँ साथ में ये भी कहता हूँ कि अगर इसको चीनी समझकर खाओगे तो कुछ नही होगा। हाँ इसको महाराज जी का प्रसाद समझकर खाओगे और विश्वास करोगे कि हाँ इस प्रसाद से मेरा काम हो जाएगा तो आपका काम हो जाएगा, 100 प्रतिशत आपका काम हो जाएगा, विश्वास का खेल है। विश्वास का खेल क्यों है? तुम 24 घण्टे भगवान–भगवान करते रहते हो, तुमने देखा है भगवान को कभी? कहीं नही देखा ना? ऐसे ही भगवान–भगवान करते रहते हो। भगवान है या नही है, क्या पता? चलो छोडो भगवान को, भगवान है कि नही, वो ही जाने, लेकिन तुम तो हो, ये तो रिएलिटी है, ये तो वास्तविकता है, तुम तो हो, भगवान किसने देखा है, वो कहाँ रहता है? एक बात और बताऊँ? आज तक भगवान को किसी ने नही देखा है अगर कोई कहता है मैने भगवान को देखा है, तो वो महा झूठा है। जो कहीं है ही नही उसे क्या देखना, जो चीज है ही नही, उसे कौन देखे? लेकिन तुम तो हो, ये तो रिएलिटी है। तुम अपने ऊपर विश्वास करो, भगवान को छोडो, अपने ऊपर विश्वास करो हाँ मैं हूँ और मैं सब कुछ कर सकता हूँ। मेरे अन्दर सब शक्तियाँ हैं। मैं सब कुछ कर सकता हूँ, ये विश्वास रखो मन में।

परमदयाल जी महाराज कहते थे– जब वो वहाँ (समाधि में) पहुँच जाते थे और वहाँ से वापिस आकर कहते थे– मैं चाहूँ तो इस संसार को 1 सैकिंड में पलट सकता हूँ लेकिन साथ ही कहते थे, मैं ऐसा क्यों करूँ? मैं प्रकृति के खिलाफ क्यों खिलवाड करूँ, सबको अपने–2 कर्म भुगतने दो, इसी में सबका भला है। मैं उनके कर्मों में क्यों खिलवाड करूँ? अब जरा सोचो वो कहते थे अगर मैं चाहूँ सारे संसार को 1 सैकिंड में पलट सकता हूँ, वो ऐसा क्यों कहते थे? उन्होने अपने आप को पहचान लिया था और जब आप भी अपने आपको पहचान लोगे कि मैं कोन हूँ? आपके अन्दर भी सारी शक्तियाँ आ जाएंगी। आप भी 1 सैकिंड में संसार को पलट सकते हो लेकिन बात यही है कि अपने आप को पहचान लो। अंग्रेजी में कहत हैं Self Realization is God Realization अगर तुमने अपने आप को पहचान लिया, भगवान को पहचान लिया। जब तुमने अपने आपको पहचान लिया फिर तुममे और भगवान में कोई फर्क नही है। You are God, भगवान कहीं और नही है, भगवान तुम्हारे अन्दर है।

कबीर साहब कहते हैं–

तिन खोजा जिन पाया, गहरे पानी पैठ।
मैं अभागिन डूबन डरी, रही किनारे बैठ।।

जिसने डुबकी लगाई उसको मोती मिले, जो पानी से डर गया वो किनारे पर बैठ गया। डुबकी लगाओ और निकालो वो हीरा जो हमारे अंदर छुपा हुआ है।

कबीर साहब कहते हैं–

मेरा हीरा हिराना कचरे में।

मेरे पास एक हीरा था वो इस कचरे (शरीर) में कहीं खो गया। ढूँढो उस हीरे को, जब तुम वो हीरा पाओगे, तुम भगवान को पाओगे, तुम अपने आप को पाओगे। जब तुमको पता लगेगा कि मैं कोन हूँ?

देखो जब मैं प्रसाद देता हूँ और कहता हूँ विश्वास करो, तुम किस चीज पर विश्वास करते हो, तुम विश्वास करते हो कि जब मैं ये प्रसाद खाऊँगा तो ठीक हो जाऊँगा और तुम विश्वास करते हो तो ठीक हो जाते हो।

एक बुढिया थी, उसका कोई नही था परिवार में, वो गरीब थी। एक दिन उसको छाती में र्दद हो गया। वो सरकारी अस्पताल में गई। वहाँ डॉक्टर ने कहा–एक्सरे वाले से, इसका एक्सरा लेना। एक्सरे में देखा दोनो Lungs में देखा egree कैंसर था। डॉक्टर कहता है को– माई तेरा ईलाज यहाँ नही है, बॉम्बे जाओ वहाँ
Tata Institute है। वहाँ तेरा ईलाज होगा। बुढिया के पास ना पैसा था और ना ही ये पता था कि बॉम्बे कैसे जाते हैं। वो घर आई और बाबा फकीर के फोटो के सामने रोने लगी। रोते–2 उसका मन एकाग्र हो गया और जब उसका मन एकाग्र हो गया, बाबा फकीर प्रकट हो गए। बाबा फकीर ने एक कागज दे दिया उसको, माई ये कागज ले, इसमे जो दवाई लिखी है उसे खा लेना तुम ठीक हो जाओगी। माई को होश आया, उसने देखा मेरे हाथ में कागज है, उसने सोचा बाबा फकीर आये थे उन्होने मुझको प्रसाद दे दिया। वो समझी नही बाबा फकीर ने क्या कहा, वो कागज ही खा गई। फिर समय के साथ–साथ उसकी छाती का दर्द सही होने लग गया और एक दिन उसको महसूस हुआ कि मैं ठीक हो गई हूँ।

लोग उससे पूछ रहे थे तबीयत कैसी है? उसने कहा मैं बिल्कुल ठीक हूँ। उन्होने पूछा कैसे ठीक हो गई? उसने कहा बाबा आये थे उन्होने प्रसाद दे दिया और मैं बिल्कुल ठीक हो गई। दो–चार लोग, पता नही ये क्या कह रही है, उसे फिर से डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने उसको देखकर कहा माई तू यहाँ है अभी गई नही? माई ने कहा बाबा आये थे उन्होने प्रसाद दे दिया और मैं ठीक हो गई। डॉक्टर ने एक्सरे वाले से कहा इसका एक्सरा लेना, वो गया उसका एक्सरा लेकर आया। डॉक्टर ने देखा एक्सरे में दोनो Lungs साफ थे। वो एक्सरे वाले को डाँटने लग गया अरे किसका एक्सरे ले आया मैने कहा था इस माई का एक्सरे लेकर आना है, उसने कहा डॉक्टर साहब ये इसी माई का एक्सरे है। डॉक्टर हैरान हो गया, उसने पूछा माई तू ठीक कैसे हो गई? माई एक ही बात कह रही थी बाबा आये थे उन्होने मुझे प्रसाद दे दिया और मैं ठीक हो गई। डॉक्टर की समझ में कुछ नही आ रहा था, वो बोला हाँ माई ठीक है अब आप जाओ।

अब ये घटना दिल्ली आ गई। बाबा फकीर सत्संग दे रहे थे और वो माई बार–बार खडी हो रही थी और सेवादार उसको बार–बारी नीचे उबैठा रहे थे। बाबा फकीर की नजर उस पर पड गई, ये माई बार–बार क्यों उठ रही है। बाबा फकीर ने पूछा माई क्या बात है बताओ? उस माई ने सारी बात सुनाई, सब लोग सुन रहे थे उनमें मंगलदेव जी भी थे। बाबा फकीर कहते हैं माई ना मैं डॉक्टर हूँ और ना मैं तुझे जानता हूँ तू कहाँ रहती है और ना मैंने कोई दवाई दी है, हाँ ये सच है कि तू ठीक हो गई। तू अपने विश्वास से ठीक हो गई। तुमने अपने विश्वास से मुझको प्रकट किया और मैंने तुमको कागज दे दिया और तुमने वही कागज समझा कि यही दवाई है और तुम उसे खा गई, तुमने उस कागज पर विश्वास किया और तुमने सोचा कि मैं इसे खाकर सही हो जाऊँगी और तुम अपने विश्वास से ठीक हो गई। तो किसन किया ये काम, तुम्हारे अपने विश्वास ने, क्यों किया तुम्हारे विश्वास ने ये काम, क्योंकि हम भी उसी मालिक का एक अंश हैं और भूले–भटके हैं, हमको

पता ही नही है हम कौन है? भीख माँगते रहते हैं, बाबा दो रूपए दे दो, बाबा दो रूपए दे दो। जबकि हम अपने मन से करोडो रूपए पैदा कर सकते हैं।

महाराज जी कहते थे अगर मैं चाहूँ तो एक सैकिंड में दुनिया को पलट सकता हूँ और वो अपने मन से अरबो रूपए भी पैदा कर सकते थे। ऐसे ही हम भी अपने मन से जो चाहें कर सकते हैं, हमारे मन में भी वही मालिक बैठा है। हम भी सोने के अम्बार लगा सकते हैं। लेकिन हम भूले–विसरे हैं और ऐसे लाचार हैं जैसे कि हम दुनिया के सबसे पिछडे हुए हैं। बाबा 2 रू0 दे दो, बाबा 2 रू0 दे दो और पता ही नही हम कौन हैं? हमारे अंदर क्या शक्ति है। जितने भी करामात करते हैं, वो कैसे करते हैं? अपने मन की शक्ति से, उन्होने अपने मन की शक्ति को पहचान लिया, उन्होने अपने आप को पहचान लिया।

तुम लोग दौडे–दौडे जाते थे बाबा मर गए–बाबा मर गए,
बाबा (शब्दानन्द महाराज) एक बार कहते थे बच्चा सब ठीक हो जाएगा। वो एक बार कहते थे और तुम्हारा काम हो जाता था, कैसे हो जाता था? उनके पास क्या था? हमारे जैसे ही कपडे पहनते थे, हमारे जैसा ही खाना खाते थे। उन्होने अपने आपको पहचान लिया था, मैं कौन हूँ? जब मनुष्य अपने आपको पहचानता है उसमें सारी शक्तियाँ आ जाती हैं फिर वो कुछ भी कर सकता है लेकिन करेगा नही, कभी नही करेगा। वो आपको ऐसा बुद्धू बनायेगा जैसे वो कुछ जानता ही नही।

परमदयाल जी महाराज कहते थे अगर मैं अपनी असलियत बता दूँ कि मैं कौन हूँ तो लोग मेरा एक बाल भी नही रहने देंगें। इसलिए सन्त लोग अपने आपको प्रकट नही करते। क्यों प्रकट नही करते? क्योंकि फिर संसार वाले हमको जीने नही देंगे। शब्दानन्द महाराज एक दम बुद्धू बनकर बैठे रहते थे और जब कोई प्रेमी आता था, तो वे कहते थे हाँ तुम्हारा काम हो जाएगा। ऐसे नही करते थे ये लो सोने की चैन, ऐसे कभी नही करते थे और आज का पाठ यही है कि अपने आपको पहचानो तुम कौन हो?

!! राधा–स्वामी !!